भारतीय विद्यालय अल वादी अल कबीर (2024-25)

कक्षा - दसवीं	विषय: अर्थग्रहण (गद्यांश)	Date – 07-08-2024
कार्य-पत्रिका संख्या: 7(i)		Note: Pl. file in portfolio

नाम: ____________________अनुभाग: ______अनुक्रमांक: ______दिनांक: ____________

प्रश्न - I - निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

ईर्ष्या का यह अनोखा वरदान है। जिस मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या घर बना लेती है, वह उन चीज़ों से आनंद नहीं उठाता जो उसके पास मौजूद हैं, बल्कि उन वस्तुओं से दुख उठाता है, जो दूसरों के पास हैं। वह अपनी तुलना दूसरों के साथ करता है और इस तुलना में अपने पक्ष के सभी अभाव उसके हृदय पर दंश मारते रहते हैं। दंश के इस दाह को भोगना कोई अच्छी बात नहीं है। मगर ईर्ष्यालु मनुष्य करे भी तो क्या? आदत से लाचार होकर उसे यह वेदना भोगनी पड़ती है।

एक उपवन को पाकर भगवान को धन्यवाद देते हुए उसका आनंद नहीं लेना और निरंतर इस चिंता में निमग्न रहना कि इससे भी बड़ा उपवन क्यों नहीं मिला, एक ऐसा दोष है जिससे ईर्ष्यालु व्यक्ति का चरित्र और भी भयंकर हो उठता है। अपने अभाव पर दिन-रात सोचते-सोचते वह सृष्टि की प्रक्रिया को भूलकर विनाश में लग जाता है और अपनी उन्नति के लिए उद्यम करना छोड़कर वह दूसरों को हानि पहुँचाने को ही अपना श्रेष्ठ कर्तव्य समझने लगता है।

ईर्ष्या की बड़ी बेटी का नाम निंदा है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु होता है, वही व्यक्ति बुरे किस्म का निंदक भी होता है। दूसरों की निंदा वह इसलिए करता है कि इस प्रकार, दूसरे लोग जनता अथवा मित्रों की आँखों से गिर जाएँगे और तब जो स्थान रिक्त होगा, उस पर अनायास मैं ही बिठा दिया जाऊँगा।

मगर, ऐसा न आज तक हुआ है और न आगे होगा। दूसरों को गिराने की कोशिश तो अपने को बढ़ाने की कोशिश नहीं कही जा सकती। एक बात और है कि संसार में कोई भी मनुष्य निंदा से नहीं गिरता। उसके पतन का कारण अपने ही भीतर के सद्गुणों का ह्रास होता है। इसी प्रकार कोई भी मनुष्य दूसरों की निंदा करने से अपनी उन्नति नहीं कर सकता। उन्नति तो उसकी तभी होगी, जब वह अपने चरित्र को निर्मल बनाए।

ईर्ष्या का काम जलना है, मगर सबसे पहले वह उसी को जलाती है जिसके हृदय में उसका जन्म होता है। आप भी ऐसे बहुत से लोगों को जानते होंगे जो ईर्ष्या और द्वेष की साकार मूर्ति हैं।

1. ईर्ष्यालु मनुष्य को कौन-सी वेदना भोगनी पड़ती है?

(क) उपवन का असीम आनंद लेना　　(ख) ईश्वर का सदैव धन्यवाद करना

(ग) अभाव के दंश-दाह को भोगना　　(घ) लगातार चिंता से विमुक्त रहना

2. लेखक ने ईर्ष्या को अनोखा वरदान क्यों कहा है?

(क) व्यक्ति अपनी वस्तुओं से आनंदित होता है।　　(ख) वह दूसरों की वस्तुओं से दुखी होता है।

(ग) वह अपनी तुलना किसी से नहीं करता है।　　(घ) ईर्ष्यालु स्वयं को भाग्यशाली मानता है।

3. निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को पढ़कर दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए:
कथन (A): संसार में कोई भी मनुष्य निंदा से नहीं गिरता।
कारण (R): उसके पतन का कारण अपने ही भीतर के अवगुणों का ह्रास होता है।
(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(ख) कथन (A) ग़लत है परंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों ग़लत हैं।
(घ) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) उसकी ग़लत व्याख्या करता है।
4. उपर्युक्त गद्यांश के लिए एक उचित शीर्षक लिखिए।
(क) लोभ (ख) मोह (ग) क्रोध (घ) ईर्ष्या
5. ईर्ष्यालु मनुष्य अपनी किस आदत से लाचार होकर कष्ट उठाता है?

___

___

___

6. अपने अभाव के विषय में सोचकर ईर्ष्यालु मनुष्य क्या करता है?

___

___

___

7. ईर्ष्यालु व्यक्ति दूसरों की निंदा क्यों करता है?

___

___

___

8. ईर्ष्या किसे जलाती है?

___

___

___

9. 'साकार' शब्द का विग्रह कीजिए तथा संधि का नाम भी लिखिए।

___